


# बालादित्य और यशोधर्मा

## हूणों का फटकार

Vol 717 | ₹90




तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके - अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से खरीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

**महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ**
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

**भारतीय उत्कृष्ट साहित्य**
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

**हास-परिहास और दंतकथाएँ**
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

**वीरांगना**
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

**दिव्यदृष्टा**
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

**समकालीन साहित्य**
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ट कहानियाँ

| कथा | चित्र | संपादक |
|---|---|---|
| कमलेश पांडे | दिलीप कदम | अनंत पै |

मुखपृष्ठ
सी. एम. विटणकर

Amar Chitra Katha Pvt Ltd
© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1971, Reprinted June 2022
ISBN 978-93-90055-54-8

Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza,
Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri East, Mumbai 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : +91-22 49188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

# बालादित्य और यशोधर्म



स्कंदगुप्त के काल में हूणों ने कई बार मगध पर हमले किये, पर हर बार उन्हें मुँह की खानी पड़ी। किंतु पाँचवीं सदी के अंत में उसकी मृत्यु के बाद उन्होंने फिर चढ़ाई की। इस बार चालाक और निर्दय तोरमाण उनका नेता था।

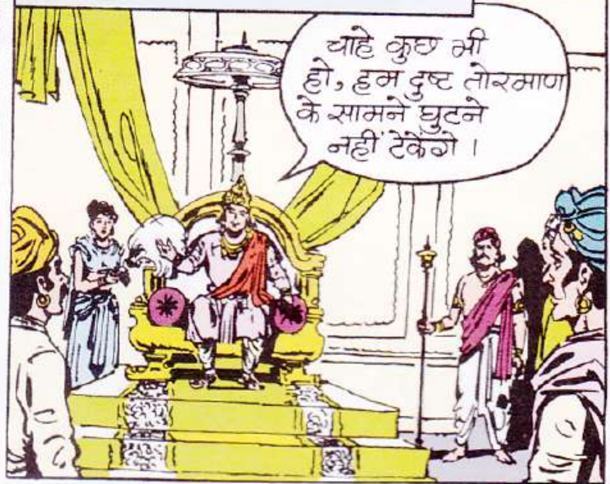






* मारो! मारो!

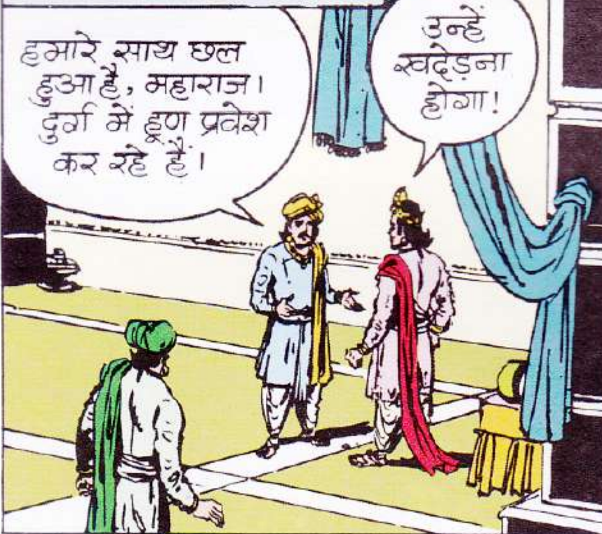

अनेक कमजोर शासकों ने सम्मान की अपेक्षा जान बचाना पसंद किया।
आपकी हर इच्छा को हम आदेश मानेंगे, तोरमाण। हमें जीवन-दान दो!
मगध के शासक को भी ऐसी ही बुद्धिमानी दिखानी चाहिए।


किंतु मगध अपने गुप्त शासकों के गौरव को नहीं भूला था। उस समय वहाँ स्वाभिमानी नरसिंह गुप्त बालादित्य शासन करता था।
चाहे कुछ भी हो, हम दुष्ट तोरमाण के सामने घुटने नहीं टेकेंगे।


परंतु बालादित्य के रिश्ते के भाई, वैन्य गुप्त के मन में कुछ और था।
अब अवसर आया है मेरे लिए मगध का सम्राट बनने का!


वह तोरमाण के पास पहुँचा।
बालादित्य हार नहीं मानेगा। उसे हराने में मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ।
जो अपने रिश्ते के भाई के साथ दगा करने को तैयार है, उसपर मैं कैसे भरोसा करूँ?


भरोसा तो करना होगा। आपको मेरी जरूरत है - बालादित्य को हराने के लिए- और मुझे आपकी- मगध के सिंहासन पर बैठने के लिए!
ओहो! अब समझा! अब कहो अपनी बात...


अगले दिन मगध की राजधानी पाटलिपुत्र में-
हमारे साथ छल हुआ है, महाराज। दुर्ग में हूण प्रवेश कर रहे हैं।
उन्हें खदेड़ना होगा!


बालादित्य और उसकी सेना वीरता से लड़ी।
मगध की जय!
तोरमाण की जय!

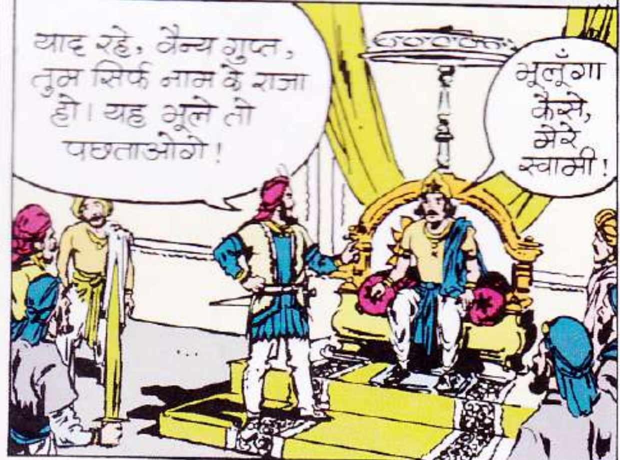

मेरी सेना ने जान लड़ा दी है, किंतु हूणों की संख्या बहुत अधिक है। हम जीत नहीं पायेंगे... फिर भी...


वह दुर्ग में लौट कर अपनी माता के पास गया।
माँ, मुझे आशीर्वाद दो। मैं अंतिम युद्ध लड़ने जा रहा हूँ - मैं जीवन बलिदान कर दूँगा।


यह मूर्खता का काम है, बेटा। अपनी सेना ले कर जंगल में भाग जाओ और वहाँ से लड़ाई जारी रखो।
आपकी सलाह का मर्म मैं समझ गया, माँ। जो आप कहती हैं वही करूँगा।


बालादित्य और उसके सैनिक जंगल में भाग गये...

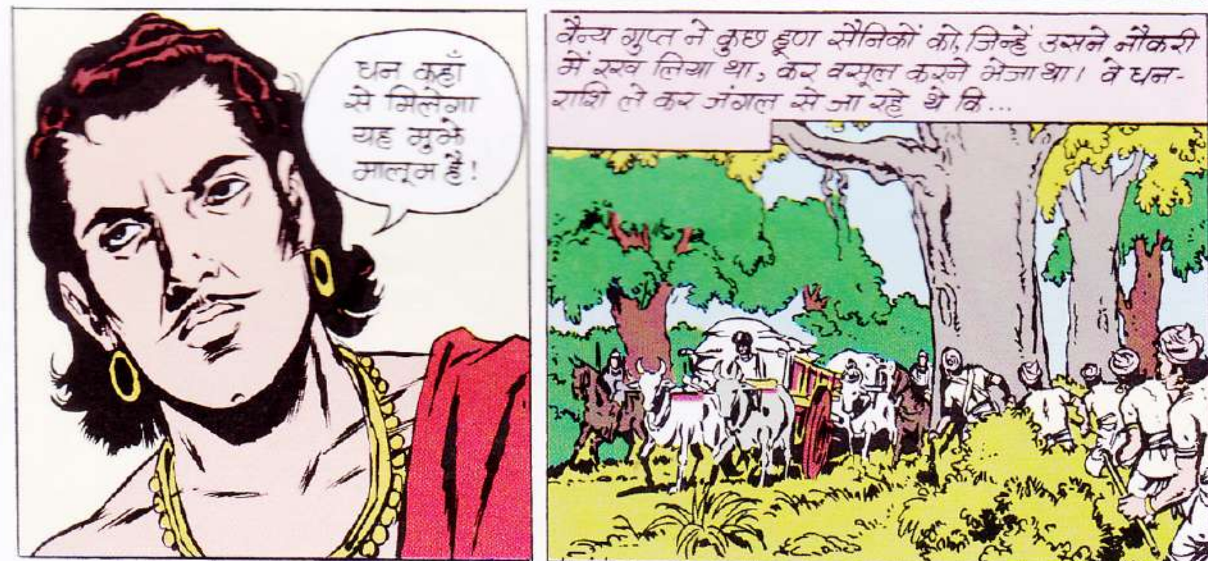

... और तोरमाण पाटलिपुत्र के राजमहल में पहुंचा।
यह है उस स्कंद गुप्त का सिंहासन जिसने भारत को जीतने के हूणों के सपने को चूर-चूर किया था! हा! हा! हा!


उसने वैन्य गुप्त को सिंहासन पर बिठाया।
याद रहे, वैन्य गुप्त, तुम सिर्फ नाम के राजा हो। यह भूले तो पछताओगे!
भूलूँगा कैसे, मेरे स्वामी!


वैन्य गुप्त ने राज्य तो हथिया लिया, पर जनता का मन नहीं जीत पाया।
मैं तोरमाण हूँ। वैन्य गुप्त, मुझे प्रणाम कर! वैन्य गुप्त, मेरे पैरों की धूल चाट कर साफ कर! वैन्य गुप्त, सिर के बल खड़ा हो जा!


अगले ही क्षण_
यह क्या हो रहा है? अपने सम्राट का अपमान करते हो! तुम्हें इसका दंड भोगना पड़ेगा।
हमारा सम्राट! वाह! वह मूर्ख, धोखेबाज कैसे मगध का सम्राट हो सकता है!?
कठपुतली का खेल दिखानेवाले गरीब को पकड़ने के बदले उसका आभार मानना चाहिए! उसने तुम्हारी आँखें खोली हैं। उठो, महाराज बालादित्य की सहायता करो।


वैसे भी अनेक युवक सैनिक वैन्य गुप्त के विरुद्ध थे। वे सब बालादित्य से जा मिले।
महाराज, तोरमाण अपने देश लौट गया है। हम देशद्रोही को हटा देने में आपका साथ देंगे।
तोरमाण चला गया, पर काफी सेना पीछे छोड़ गया है। हमें सावधानी बरतनी होगी। शस्त्रास्त्र आदि के लिए धन भी चाहिए।

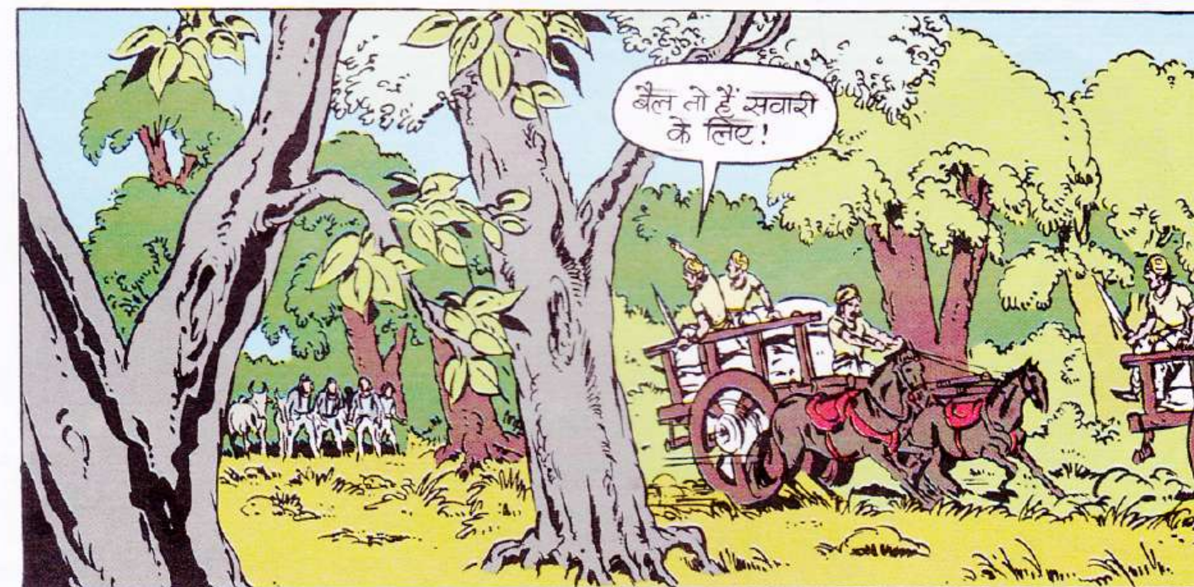

धन कहाँ से मिलेगा यह मुझे मालूम है!
वैन्य गुप्त ने कुछ हूण सैनिकों को, जिन्हें उसने नौकरी में रख लिया था, कर वसूल करने भेजा था। वे धन-राशि ले कर जंगल से जा रहे थे कि...


...कुछ आदमियों का गिरोह उनपर टूट पड़ा।
सामना करना बेकार होगा। घोड़ों से उतर जाओ।
जान प्यारी है तो जो कहते हैं करते जाओ।


तुम हो कौन? अरे! ये बैल क्यों खोल रहे हो?
देखते जाओ!


इन्होंने हमारी गाड़ियों में घोड़े जोत दिये!
ये हैं कौन?


नमस्कार, दोस्तो! हम अब चले।
हमारी गाड़ियाँ और घोड़े ले जाओगे?
अब हम राजधानी कैसे पहुँचेंगे?


बैल तो हैं सवारी के लिए!


ये कौन थे? लुटेरे?
उनसे भी बुरे! बालादित्य के आदमी थे!


अगले दिन दरबार में-
सारा धन हमसे छिन गया और हमारे कुछ आदमी भी मारे गये, महाराज!
फिर कभी ऐसा न हो... वरना... तीरमाण का क्रोध तुमपर ही बरसेगा।


कुछ दिनों बाद रात को दो आदमी शाही अस्तबल में घुस आये।
मैंने फाटक खुला छोड़ दिया है। अब घोड़े खोलता हूँ...
...और मैं घास में आग लगाता हूँ। प्यारे घोड़ो, अब तुम नयी जगह चलोगे... बालादित्य के यहाँ!


कुछ ही क्षणों में-
अरे, रोको! घोड़े भागे जा रहे हैं! कोई आओ! रोको!
आग! आग!
शाही अस्तबल...! बुझाओ!


अगले दिन अस्तबल का अधिकारी भय से काँपता हुआ राजा के सामने उपस्थित हुआ।
...और कई घोड़े जंगल में गायब हो गये, महाराज। वे शायद ही वापस मिलें।
मूर्ख, इस असावधानी के लिए तुझे कोड़े लगवाये जायेंगे!

इस तरह के धावे बार-बार होने लगे तो –

बालादित्य को पकड़ कर मौत के घाट उतार देने पर ही मैं चैन से बैठ पाऊँगा।

वैन्य गुप्त इस तरह चिंता में था...

...पर मगध की जनता प्रसन्न थी।

इतनी हूण सेना के होते हुए भी वैन्य गुप्त बालादित्य का सामना नहीं कर सकता!

मैं तो मनाता हूँ कि वे शीघ्र ही मगध लौटें!

इस बीच वंग⊕ में गोपचंद्र ने वैन्य गुप्त की अधीनता का जुआ उतार फेंका और स्वाधीन हो गया।

हम आज़ाद हैं! वैन्य गुप्त अब हमारा सम्राट नहीं है। मेरा विश्वास है, शेष मगध भी यही मार्ग अपनायेगा।

वैन्य गुप्त के दुर्भाग्य से तभी तोरमाण अपनी राजधानी, पवैया* में मृत्यु-शैया पर था।

बेटे मिहिरकुल, हूण साम्राज्य की बागडोर अब तुम्हारे हाथ में है! स्थाणु# तुम्हारा कल्याण करें।

मैं कोई कसर नहीं रखूँगा, पिता जी!

⊕ आधुनिक बंगाल * पंजाब में आधुनिक सियालकोट के पास
# हूणों के इष्ट देवता भगवान् शिव


तोरमाण की मृत्यु का समाचार बालादित्य को मिला तो –
मिहिरकुल उधर हूण साम्राज्य को सम्हा-लने में लगा है। हम इधर मगध पर अधिकार कर लें।
मिहिरकुल के पास न समय है न शक्ति कि हमारा सामना कर सके।


बालादित्य और उसकी सेना ने मगध की ओर कूच कर दिया।
अपनी प्यारी मातृभूमि को देखने को कितना उता-वला हूँ मैं!


उधर पाटलिपुत्र में –
सुना तुमने? हमारे महाराज वापस आ रहे हैं!
तब तो मगध का सिंहासन उनके लिए खाली करवाना चाहिए।
देशद्रोही को अब एक क्षण भी सिंहासन को अपवित्र नहीं करने देंगे!


और वे महल पर चढ़ दौड़े।
मगध की जय!
बालादित्य की जय!
बालादित्य के समर्थक! हजारों! अरे... मेरे सैनिक भी इनसे जा मिले हैं! इनसे जान बचानी होगी।


अब भागने की बारी वैन्य गुप्त की थी। वह भाग भी गया और मगध में फिर कभी दिखाई नहीं दिया।


मगध के द्वार बालादित्य के स्वागत के लिए खोल दिये गये।
बालादित्य अमर हो! गुप्त साम्राज्य की जय!


मिहिरकुल ये खबरें पा कर क्रोध में भर गया।
मैं मगध की ईंट से ईंट बजा दूँगा!
हुजूर, उतावली ठीक नहीं। यहाँ चतुराई से काम लेना होगा। लड़ने के बदले समझौता करना होगा।


समझौता? हूण सल्तनत के दुश्मन से!? हूणों के खून से जीती गयी जमीन यों ही छोड़ दें!?
सल्तनत के मामले सुलझाने के लिए अभी आपका यहाँ रहना जरूरी है। फिलहाल हमें मगध पर बालादित्य का हक मान लेना चाहिए।


मिहिरकुल के छोटे भाई ने भी मंत्री का समर्थन किया।
बड़ी सूझ-बूझ की बात इन्होंने कही है। हमें यही करना चाहिए।
ठीक है। लेकिन बालादित्य को खिराज अदा करना होगा।


बहुत अच्छा। इससे हमारा कुछ नुकसान नहीं होगा और समय भी मिल जायेगा।







बालादित्य ने अपनी माता की बात मानी। फिर उसने सेना के लिए सैकड़ों जवान भर्ती किये।




वह मगध का गौरव बढ़ाने के लिए भी उसी उत्साह से प्रयत्न करने लगा।







उधर हूण शासक मिहिरकुल को अजीब झक सवार हुई।
मैं बुद्ध के धर्म-वचनों को समझना चाहता हूँ। उनकी शांति को जानना चाहता हूँ। किसी बौद्ध गुरु को बुलवाओ।
ख्याल अच्छा है। आपकी जो रिआया बुद्ध और उनके उपदेशों पर श्रद्धा रखती है उसका मन आप जीत लेंगे।

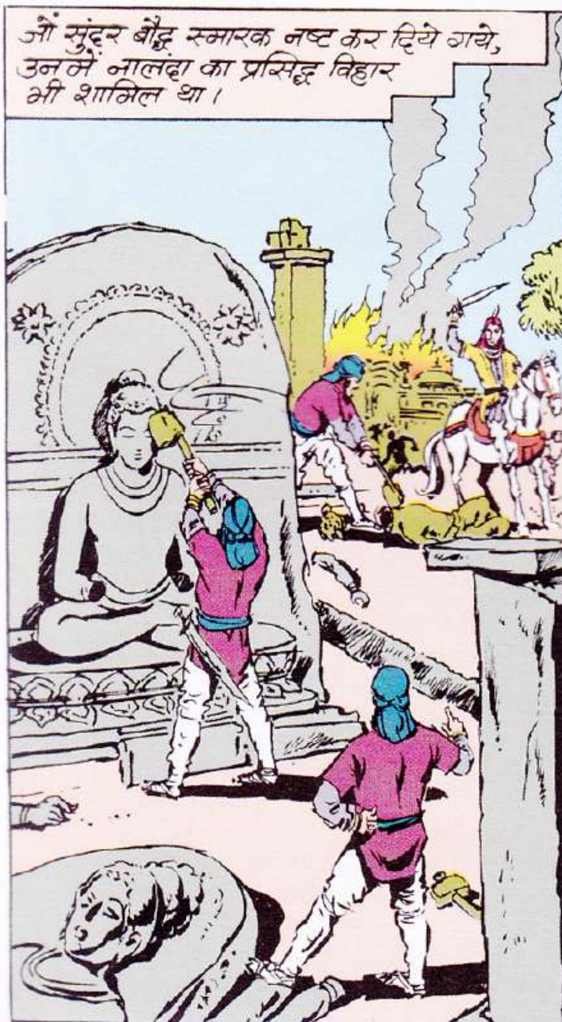

लेकिन बौद्ध गुरु आने को तैयार न थे।
वह क्रूर, रक्त का प्यासा, लड़ाकू मिहिरकुल बुद्ध के उपदेश समझना चाहता है! विश्वास नहीं होता।
मैंने सच कहा है, महाराज।


तो मैं अपने किसी युवा शिष्य को भेज देता हूँ। हूण नरेश के लिए वही ठीक रहेगा।


मिहिरकुल इस अपमान से जल गया।
हूण शाह के लिए मामूली शिष्य भेजने की बात उन्होंने कही! सिपहसालार!
जी, हुजूर!


जहाँ भी बौद्ध विहार दिखाई दे उसे गिरा दो और हर बौद्ध को मार डालो।


हर बौद्ध को मार डालो! हा! हा! हा!
बुद्ध के एक-एक वचन और मूर्ति को मिटा दो! हा! हा! हा!

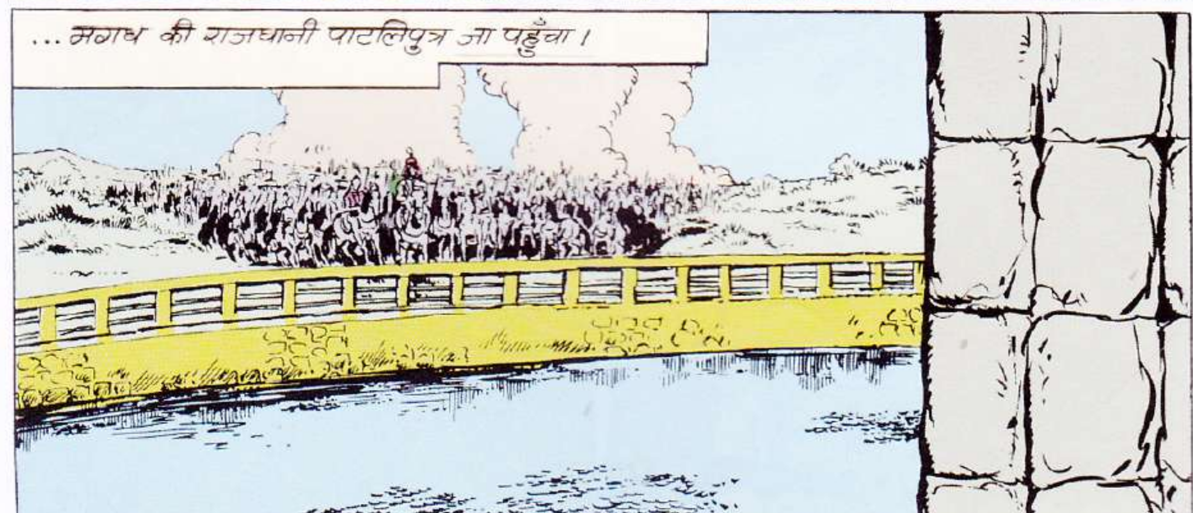

जो सुंदर बौद्ध स्मारक नष्ट कर दिये गये, उनमें नालंदा का प्रसिद्ध विहार भी शामिल था।


जब बालादित्य को यह ज्ञात हुआ–
एक भिक्षु की नादानी पर सब बौद्धों को यह दंड क्यों? मिहिरकुल को शिक्षा देनी होगी।
महाराज, धीरज से काम लें। मिहिरकुल हमको कुचल डालेगा।


कुछ अवसर ऐसे होते हैं जब वीरता की जगह साव-धानी से काम लेना श्रेय-स्कर होता है। पर यह अवसर वैसा नहीं है। मेरे साथियो, हम मिहिरकुल को खिराज नहीं देंगे!


मिहिरकुल की नयी राजधानी साकल* में-
तो वह खिराज नहीं देगा! ठीक है! हम अभी मगध पर चढ़ाई करेंगे। बालादित्य को खत्म कर देंगे! रास्ते में आने-वाली हर चीज को मिटा देंगे!


मिहिरकुल मृत्यु और विनाश का तांडव करता हुआ...


... मगध की राजधानी पाटलिपुत्र जा पहुँचा।

* आधुनिक सियालकोट


नगर के चारों ओर पानी से भरी गहरी खाइयाँ हैं। उन्हें कैसे पार करें?
पानी पीने के लिए होता है। हाथियों को पिला दो... इतना कि खाइयाँ सूख जायें!


उन्होंने यही किया।




और नगर में –
महाराज, हमारा सुरक्षा का पहला मोर्चा टूट गया। मिहिरकुल और उसकी सेना खाइयों के पार आ रही है।
क्या हम उन्हें खदेड़ नहीं सकते?


असम्भव है! हमारे पास न आदमी हैं न साधन।


महाराज, आपको भाग जाना चाहिए। मगध की आशाएँ आपपर ही टिकी हैं। आप जीवित रहे तो हमारी आशाएँ भी जीवित रहेंगी।
ये ठीक कहते हैं, पुत्र। मगध के और तुम्हारे लिए एक ही मार्ग है – तुम भाग जाओ!


किंतु... किंतु...
आपके छिपने के लिए गंगा के मुहाने का क्षेत्र सबसे ठीक रहेगा।


बालादित्य जरा देर चुप रहा। फिर–
ठीक है। मैं भाग जाऊँगा। तब तक लड़ाई जारी रहेगी।


और वे जम कर लड़े, पर शत्रु से पार नहीं पा सके।
सबको मार डालो!
मारो!
मारो!


स्वामिभक्त मंत्री को विश्वास हो जाने पर कि अब कोई चारा नहीं है, वह बालादित्य के पास आया।
महाराज, किला हाथ से जाता रहा। हूण राजमहल की ओर आ रहे हैं।
आओ, पुत्र, भाग आओ... मगध के हित के लिए।


कुछ देर में मिहिरकुल ने बड़ी शान से पाटलिपुत्र में प्रवेश किया।
बालादित्य कहाँ है? उसे पेश करो।


बालादित्य के भाग निकलने की बात सुन कर वह क्रोध में भर गया।
बालादित्य भाग गया तो पाटलिपुत्र और इसकी रिआया को इसकी कीमत चुकानी होगी- ऐसी कीमत जो वे कभी भूलेंगे नहीं!


और क्या कीमत थी वह!

मिहिरकुल को इसपर भी संतोष नहीं हुआ।

मेरी प्यास बुझेगी तो सिर्फ बालादित्य के खून से!

सब्र कीजिए, भाई साहब। आपको बहुत दिन प्यासा नहीं रहना पड़ेगा।

बालादित्य को खोजने के लिए जासूस रवाना कर दिये गये। कुछ महीनों बाद-

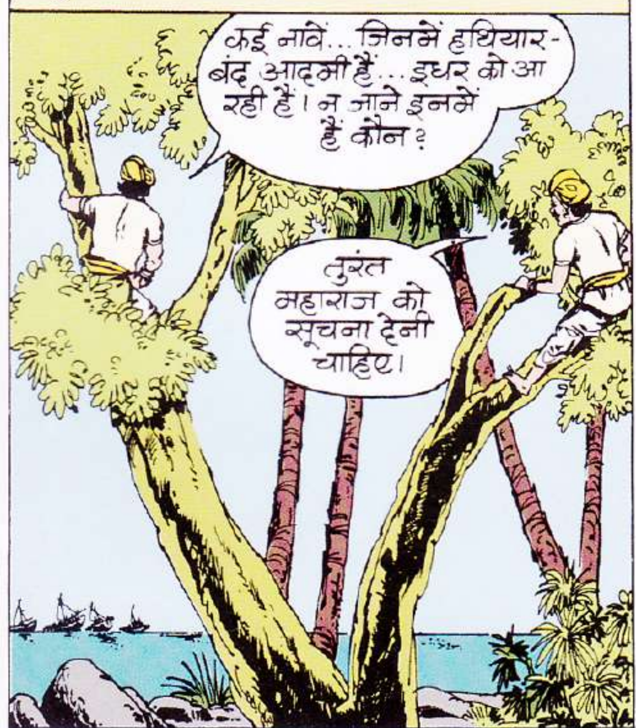
बालादित्य और उसके साथी वंग के किनारे के पास टापू पर छिपे हैं।

मैं अभी वंग को कूच करूँगा। इस बार वह भाग नहीं पायेगा।

मेरे लौटने तक मगध का राज-काज तुम सम्हालो।

बड़ी खुशी से, भाई साहब।


कुछ सेना ले कर मिहिरकुल पानी के रास्ते उस टापू को चल दिया जहाँ बालादित्य ने डेरा डाल रखा था।


टापू जब पास आने लगा –
कई नावें... जिनमें हथियार-बंद आदमी हैं... इधर को आ रही हैं। न जाने इनमें हैं कौन?
तुरंत महाराज को सूचना देनी चाहिए।


बालादित्य ने सूचना पा कर –
सब रास्तों पर पहरा लगा दो। सब सैनिक झाड़ियों और पेड़ों में छिप जायें। ढोलों की आवाज आने पर सब धावा करें।
यही होगा।


मिहिरकुल वहाँ पहुँचा तो –
कहीं कोई आवाज नहीं! बालादित्य कहाँ छिपा है?
जहाँ भी हो उसे ढूँढ़ निकालना मुश्किल नहीं है।


मिहिरकुल के सिपाही आगे बढ़ते गये...


...और छोटी-सी खुली जगह में जा पहुँचे। तभी अचानक -
मेरे छोटे-से द्वीप पर स्वागत है, बादशाह सलामत! क्या सेवा कर सकता हूँ मैं आपकी?
यह देख कर बड़ा अच्छा लगा कि हूण सल्तनत का पुराना वफादार अपना ढंग नहीं भूला है! लेकिन मैं तुमसे सेवा कराने नहीं, तुम्हारा खून पीने आया हूँ, बालादित्य!


वह तो मैं तुम्हें नहीं दे सकता, मिहिरकुल। तुम्हें खुद निकालना होगा।

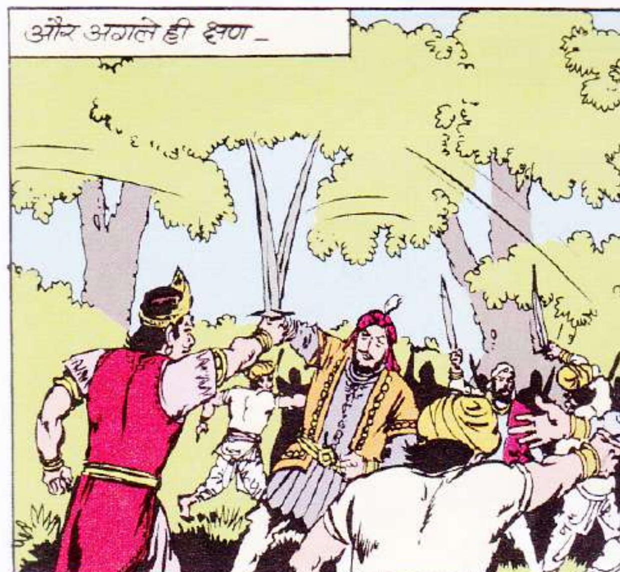

काट डालो इन्हें!


अचानक -
ढम! ढमा! ढम!
यह शोर कैसा? नगाड़ों की आवाज!


अरे ! हथियारबंद सिपाही ! सैकड़ों । पेड़ों पर...


...झाड़ियों में भी !


झिझकते क्यों हो, मिहिरकुल ? डरते हो वार करने से ?
हम हूण डर का नाम भी नहीं जानते !


और अगले ही क्षण _




मिहिरकुल की तलवार उसके हाथ से छिटक गयी।
अब तुम्हारी जान मेरे हाथ में है, मगध की तलवारों की दया के बस में है, मिहिरकुल। कहो, कैसा लगता है?
मालिक और मातहत की जगहें शायद बदल गयी हैं, बालादित्य। लेकिन तुमने मुझे छिप कर घेरा, यह बहादुरों को शोभा नहीं देता।


हज़ारों बौद्धों को मौत के घाट उतार देना क्या वीरों को शोभा देता है? तुम्हारे भाग्य का निर्णय मेरी माता करेंगी।


मिहिरकुल को बालादित्य की माँ के पास ले जाया गया।
हम "जैसे को तैसा" का सिद्धांत नहीं मानते, मिहिरकुल। हम दया और क्षमा के माननेवाले हैं।


इसलिए मैं तुम्हें मुक्त करती हूँ। भारत तुम्हारे जैसे अत्याचारी को भी थोड़ा-सा ठौर दे सकता है।
अपनी सेना के साथ तुम अपनी राजधानी को लौट जाओ।


मिहिरकुल उदास मन से अपनी राजधानी, साकल को लौटा।
हूणों की इज्जत मिट्टी में मिला दी। मेरा सिर शर्म से झुक गया है।


पर सुबह होते-होते मिहिरकुल का आत्म-विश्वास लौट आया।
एक लड़ाई हार गया तो क्या हुआ! मेरी फौज का असली हिस्सा अभी मौजूद है...जिसे मैं अपने भाई के पास छोड़ आया हूं।


बालादित्य की फतह की खबर पा कर वह साकल लौट गया होगा।


लेकिन साकल में–
हुजूर, आप शहर में नहीं आ सकते।
नहीं आ सकता? किसके हुक्म से?



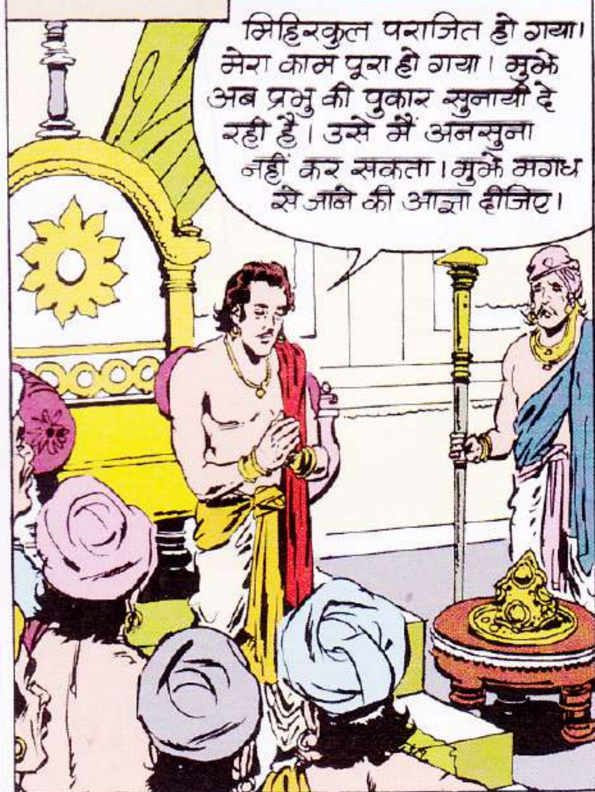




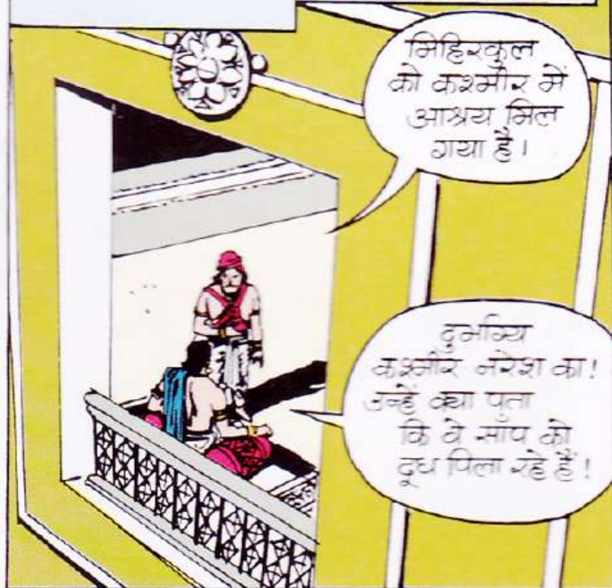
उधर बालादित्य पाटलिपुत्र लौट आया।




मगध के घाव धीरे-धीरे भरने लगे और वह खोया गौरव फिर से प्राप्त करने लगा। साथ ही बालादित्य का मन संसार से विरक्त होने लगा।

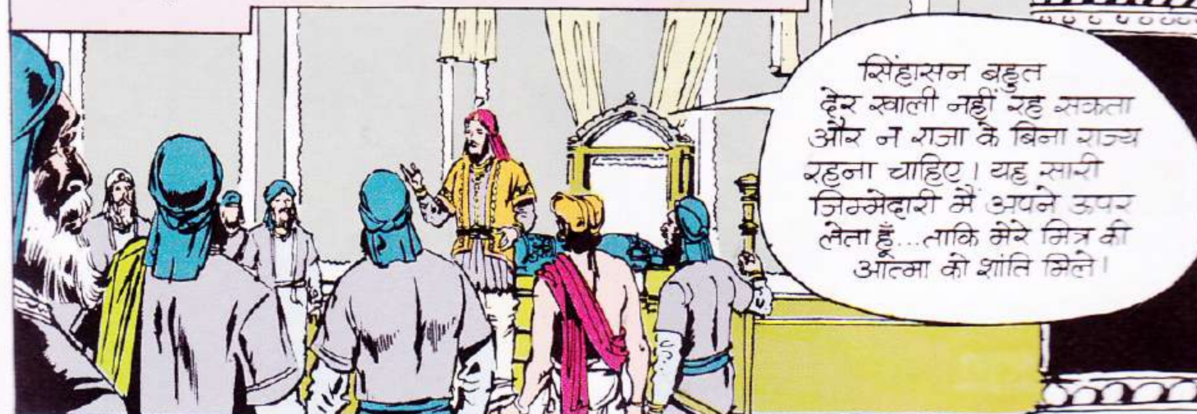



राज्य के लिए इतने कष्ट झेलने के बाद बालादित्य उसे छोड़ कर बुद्ध की शरण चला गया।


इस बीच मालवा का राजा, यशोधर्म मिहिरकुल की हर गतिविधि पर बराबर ध्यान रखे हुए था। एक दिन उसके जासूस ने उत्तर से आ कर समाचार दिया–
मिहिरकुल को कश्मीर में आश्रय मिल गया है।
दुर्भाग्य कश्मीर नरेश का! उन्हें क्या पता कि वे साँप को दूध पिला रहे हैं!


और साँप भी कैसा, महाराज! मिहिरकुल कश्मीर को ही हड़पने की तैयारी कर रहा है।
इसमें आश्चर्य कैसा!


यशोधर्म ने अपने सेनापति को बुलवाया।
सेना में और आदमी भर्ती करो। मैं नहीं चाहता कि मिहिरकुल अचानक हमें धर दबोचे।
हमारी सेना सदा तैयार है, महाराज।


उधर मिहिरकुल ने कश्मीर के राजा की हत्या करवा दी।
सिंहासन बहुत देर खाली नहीं रह सकता और न राजा के बिना राज्य रहना चाहिए। यह सारी जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूँ...ताकि मेरे मित्र की आत्मा को शांति मिले।

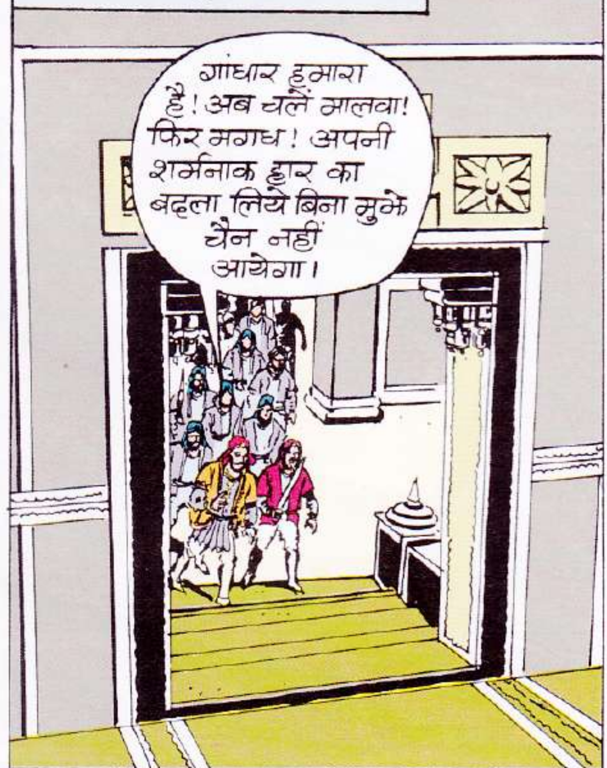

कश्मीर मिल तो गया पर मिहिरकुल को इससे संतोष नहीं हुआ।
मैं लड़ाई और खून-खराबे के बीच पैदा हुआ हूँ। मेरे कानों में पहली आवाज लोरी की नहीं, युद्ध की पड़ी थी। मैंने पहले-पहल खून से सनी तलवार ही देखी थी। इन्हें मैं भूल नहीं पाता...
सुना है गांधार का राज्य खूब तरक्की पर है। आपकी शिकायतों का इलाज शायद वहाँ मिलेगा।

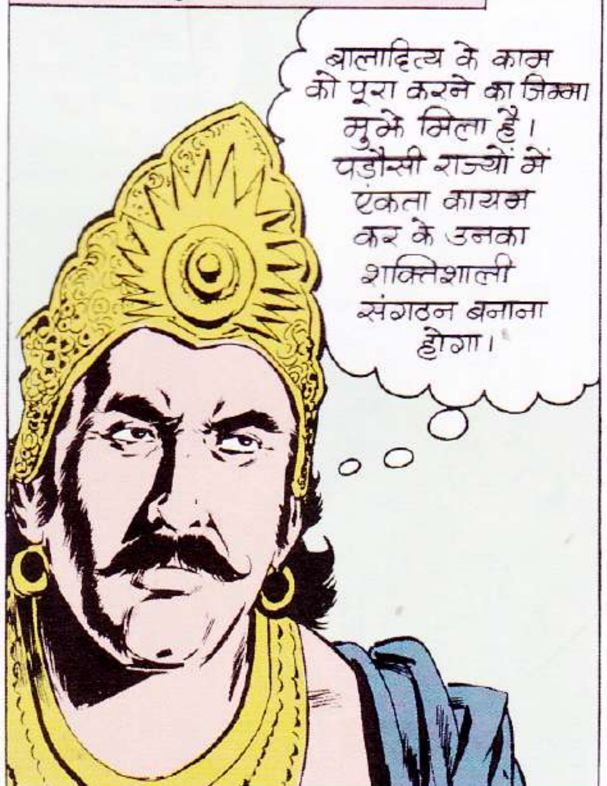

मिहिरकुल ने गांधार को कूच कर दिया।

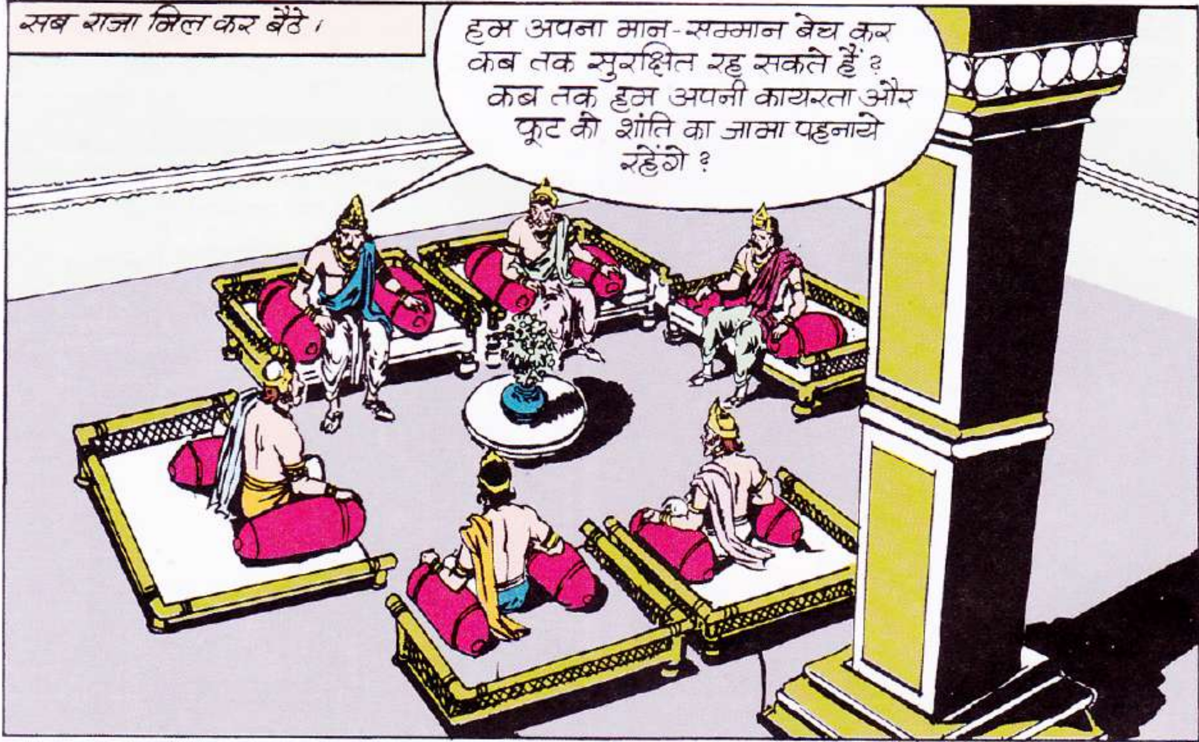

वह सेना के साथ सँकरे और टेढ़े-मेढ़े पहाड़ी रास्ते से चला जा रहा था कि एक हाथी डगमगा कर गिर पड़ा।
ईईईईई


यह देख कर मिहिरकुल दुखी होने के बदले बड़ा प्रसन्न हुआ।
हा! हा! हा! क्या खूब! कुछ और मजा लिया जाये। एक हाथी और गिराओ।


और यह क्रूरता का खेल शुरू हुआ। मरते हुए हाथियों की चिंघाड़ से मिहिरकुल पर मानो नशा छा रहा था।
हा! हा! हा! हा!
ईईक... चीईईक... कीईई क... ईईक...


मिहिरकुल फिर आगे बढ़ा और गांधार जा पहुँचा। वहाँ किसीने उसका सामना नहीं किया।
गांधार हमारा है! अब चलें मालवा! फिर मगध! अपनी शर्मनाक हार का बदला लिये बिना मुझे चैन नहीं आयेगा।


जब मिहिरकुल की योजना यशोधर्म को मालूम हुई –
बालादित्य के काम को पूरा करने का ज़िम्मा मुझे मिला है। पड़ोसी राज्यों में एकता कायम कर के उनका शक्तिशाली संगठन बनाना होगा।


सब राजा मिल कर बैठे।
हम अपना मान-सम्मान बेच कर कब तक सुरक्षित रह सकते हैं? कब तक हम अपनी कायरता और फूट को शांति का जामा पहनाये रहेंगे?


बात राजाओं के मन में उतर गयी।
तुम ठीक कहते हो, यशोधर्म। हम अब साथ जियेंगे या साथ मरेंगे - लेकिन अपनी आन पर धब्बा नहीं लगने देंगे।
तो मिहिरकुल मालवा के मैदानों में अपना अंतिम युद्ध लड़ेगा।


लड़ाई की योजना बनायी गयी।
मालवा के मैदान में मैं मिहिरकुल का सामना करूँगा। फिर तुम लोग उसकी बगल से और पीछे से धावा करना। मिहिरकुल को पूरी तरह हरा देना है... अभी नहीं तो फिर कभी नहीं।


मिहिरकुल को क्या पता था कि उसका कैसा स्वागत होगा! वह जीत के सपने देखता हुआ मालवा पहुंच गया।


रात को उसने डेरा डाला -
कल के दिन मगध को नया राजा मिलेगा - मिहिरकुल!
हर हूण सिपाही दिल से यही मनाता है।


सुबह हुई और दोनों सेनाएँ आमने-सामने आ गयीं।
मिहिरकुल, जिंदाबाद! हूण सल्तनत जिंदाबाद!
यशोधर्म की जय! मालवा की जय!


अचानक -
हमपर पीछे से हमला हो रहा है!
बगल के हिस्से से दो-चार सौ सिपाही ले कर उन्हें मार भगाओ।


पर मिहिरकुल को तभी दूसरा धक्का लगा।
हमपर बगल के हिस्से से भी हमला हो गया, हुजूर!
शैतान के बच्चे! कुछ आदमी बीच से लो और बगल-वाले हिस्सों को मज-बूत करो!


शाम होते-होते मिहिरकुल जान गया कि भाग्य उसके साथ नहीं है।
अब भागने के अलावा कोई रास्ता नहीं है – जल्दी सोचना पड़ेगा।


हम अपनी पगड़ियाँ बदल लें। तुम दुश्मन को अट-काओ और मैं भागने की कोशिश करता हूँ। हम लोग फिर मिलेंगे।
जो हुक्म हुजूर का।


मिहिरकुल जैसे ही भागा_
वह तो मिहिरकुल है - मैदान से भाग रहा है! पगड़ी बदल ली है! पीछा करो और गांधार तक खदेड़ दो!
बहुत ठीक, स्वामी!













अनुवाद : प्रकाश खन्ना

# बालादित्य और यशोधर्मा

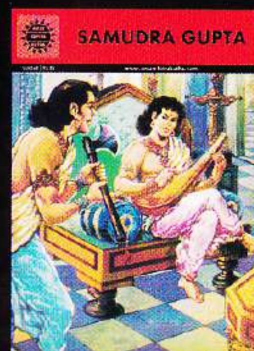
5 वीं शताब्दी ईस्वी में गांधार या आधुनिक अफगानिस्तान के हूणों ने अपनी नज़र भारत के समृद्ध राज्यों पर प्रशिक्षित की थीं। तोरोमाना, हूणों के नेता और उनके बाद उनके पुत्र मिहिरकुला ने मगध के समृद्ध राज्य को जीतने के लिए दृढ़ संकल्प किया। लेकिन उनके शासक, नरसिंह गुप्ता बालादित्य में एक औपचारिक रूप से प्रतिद्वंद्वी था। और जब हूणों ने मालवा पर अपनी नजरें जमाईं तो वह राजा यशोधर्मा थे जिन्होंने उनसे युद्ध किया।

## ए सी के: के अन्य बहादुर दिल:









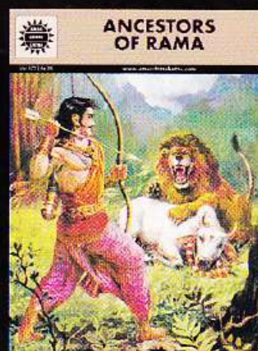




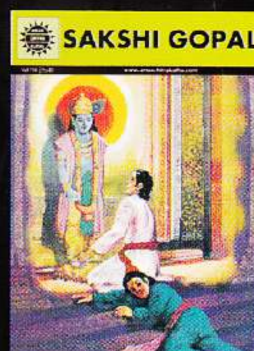
## और भी देखें:



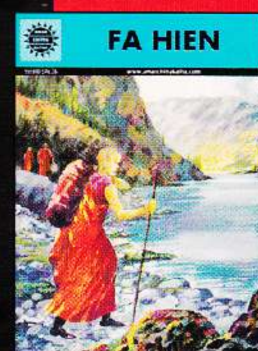

महाकाव्यों और पौराणिक कथा




भारतीय क्लासिक्स




दंतकथाएँ और हास्य कथाएँ




दूरदर्शी

www.amarchitrakatha.com ऑनलाइन पर खरीदें


ISBN 978-93-90055-54-8
9 789390 055548